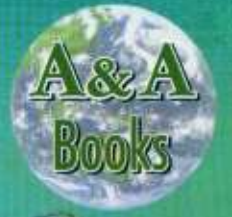


डोरिस डोरी



मिमी

चित्र : ज्यूलिया कार्गेल



16
17
18
19

डोरिस डोरी

मिमी

चित्र ज्यूलिया कार्गेल

अनुवाद झेनिया ऑस्थेल्डर

अरुंधती देवस्थले





बिंकी बाय

एक दिन सुबह मिमी माथुर सो कर उठी तो उसे लगा कि उसे कोई और बन जाना चाहिए। क्या नाम रख लूँ अपना? रिंकी राय? जूही जोशी? या सोनी सिन्हा? हाँ, सोनी ठीक रहेगा। सोनी सिन्हा उससे एकाध साल बड़ी है, और उसके बाल लम्बे हैं, कमर से नीचे तक।



सोनी सिन्हा



जूही जोशी



मिमी उठ खड़ी हुई और रोज से बिल्कुल अलग किस्म के कपड़े पहन लिए। पाजामा सिर पर पहन लिया और इस तरह, दोनों तरफ लटकती टाँगें उसकी लम्बी चोटियाँ बन गईं, एक इस तरफ और दूसरी उस तरफ। वह उन्हें झटके से पीछे डाल सकती थी या हवा में झूला भी सकती थी। अपने स्वेटर की बाँहें पेट पर कस कर उसने स्वेटर को स्कर्ट बना दिया। फिर माँ के चमचमाते जूते पहन लिए, जो उसे कभी-कभार पहनने की इजाजत थी। वाह, क्या लग रही थी वह! इस तरह चुपके से वह घर से बाहर निकली और घर का दरवाजा खटाक से बन्द कर दिया, और फिर घूम कर बाहर से घंटी दवाई।



उसकी माँ ने दरवाजा खोला ।

“नमस्ते, माथुर आंटी,” मिमी ने कहा ।

“नमस्ते, मिमी बिटिया,” माँ ने आश्चर्य से उसे घूरते हुए कहा ।

“मैं मिमी नहीं,” मिमी ने कहा । “मैं हूँ सोनी सिन्हा । अब आपको मुझे सोनी ही कहना होगा और मैं आपको माथुर आंटी कहूँगी ।”

उसकी माँ ने पलभर सोचा और वह बात समझ गई ।

अच्छा, तो अब मिमी कोई और बन गई है । फिर वह बोली, “अरे, सोनी!

बड़ा अच्छा किया जो तू आ गई । आ अन्दर ।”







पापा बैठे नाश्ता कर रहे थे। “मिमी, यह कोई नया फैशन है, सिर पर पाजामा पहनना?” उन्होंने पूछा।

“यह है सोनी सिन्हा!” उसकी माँ ने पापा से कहा।

“यह हमसे मिलने आई है।”

“अच्छा,” पापा बोले और उन्होंने सोनी को बैठने के लिए कहा। “कितनी मजे की बात है! यहाँ यह कुर्सी खाली है, हमारी मिमी कहीं बाहर गई है।”

“थैंक्यू,” मिमी ने कहा और बैठ गई।

“ब्रेड पर आलूबुखारे का जैम लगा दूँ?” पापा ने पूछा।

“नहीं,” सोनी ने कहा। “मुझे आलूबुखारे बिल्कुल पसन्द नहीं हैं।”





“वही न...!” माँ ने कहा।

“मिमी को यह बहुत पसन्द है।”

“जानती हूँ,” सोनी बोली। “मुझे खुरमानी का जैम पसन्द है।
मुझे दूध दें, शहद डाल कर।”

“ओह!” माँ ने कहा। “बहुत अच्छा जो तुम शहदवाला दूध पीती हो,
मिमी तो दूध देख कर नाक चढ़ाती है।”

“पर दूध तो हमारी हड्डियों की मजबूती के लिए बहुत जरूरी है,”
कह कर सोनी गटगट दूध पी गई।

“मिमी को भी बताना!” पापा बोले। सोनी ने वादा किया
जरूर कहेगी उससे, जब भी मौका मिला।

“मैं जरा मिमी का कमरा देख सकती हूँ?”

सोनी ने पूछा।

माँ उसे मिमी के कमरे में ले गई।



“मिमी ने अपना कमरा ठीक से नहीं रखा!” सोनी ने कहा।

“खैर,” माँ बोली। “ठीक ही है।”

“क्या आप कभी-कभार उसे डाँटती नहीं?” सोनी ने पूछा।

“हाँ,” माँ ने कहा, “कहती तो हूँ। कभी-कभी चिल्लाती हूँ, ‘अगर तुमने अपना सामान ठीक-ठाक नहीं किया तो मैं सब उठा कर बाहर फेंक दूँगी!’ उसके पापा भी यों ही कहते हैं।”

“मेरी माँ भी यही कहती है,” सोनी कुनमुनाई। “बिल्कुल यही बात! जब वह इस तरह नाराज हो जाती है, तो मेरे पेट में अजीब-सी हलचल होने लगती है।”

“सचमुच! यह तो नई बात पता चली!” माँ ने कहा, “तुम्हारा मतलब है, मिमी को भी ऐसा ही लगता है?”

“हाँ, शायद,” सोनी ने कहा।

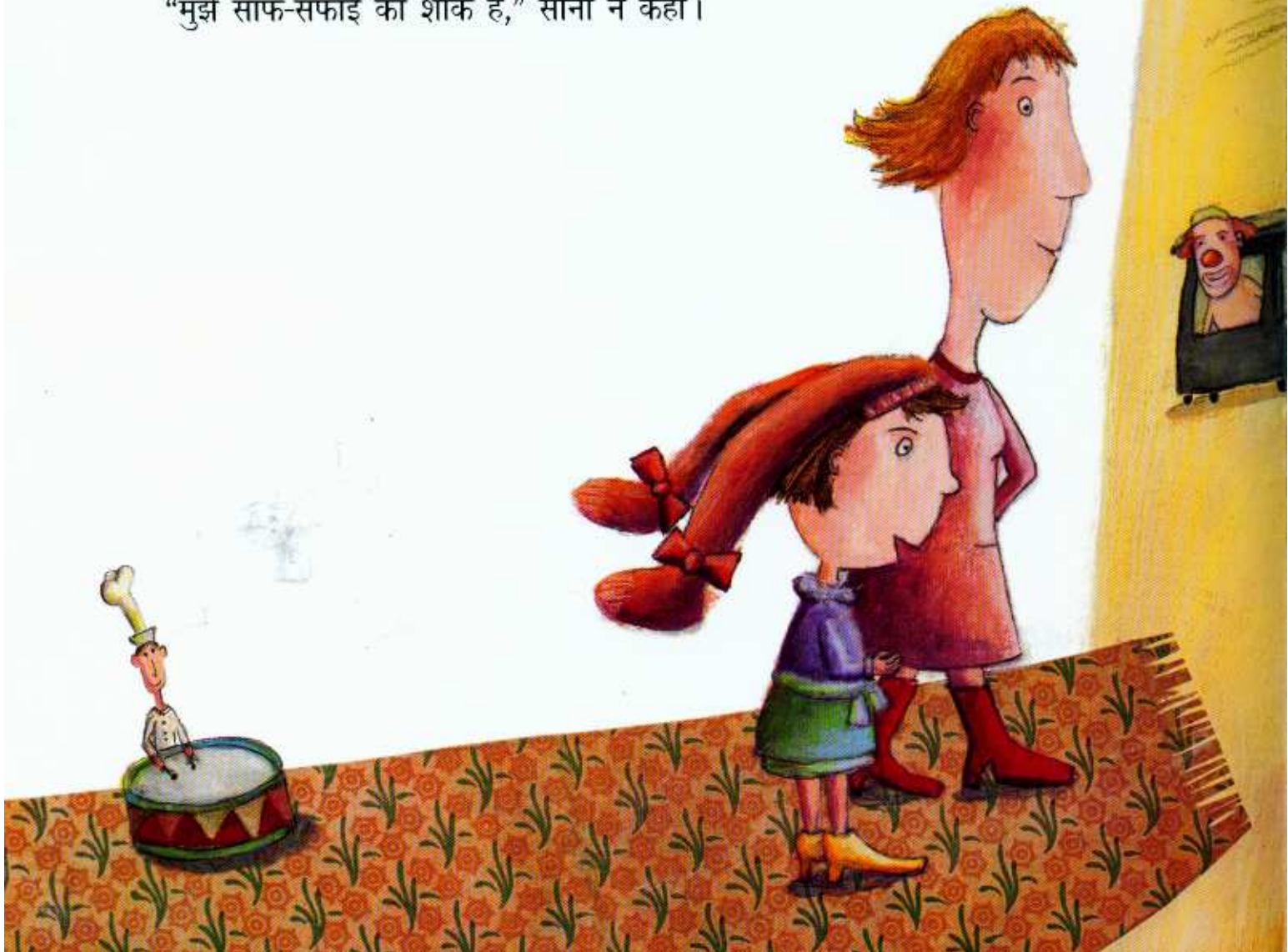
“आगे से मैं ध्यान रखूँगी...” माँ बुदबुदाई।

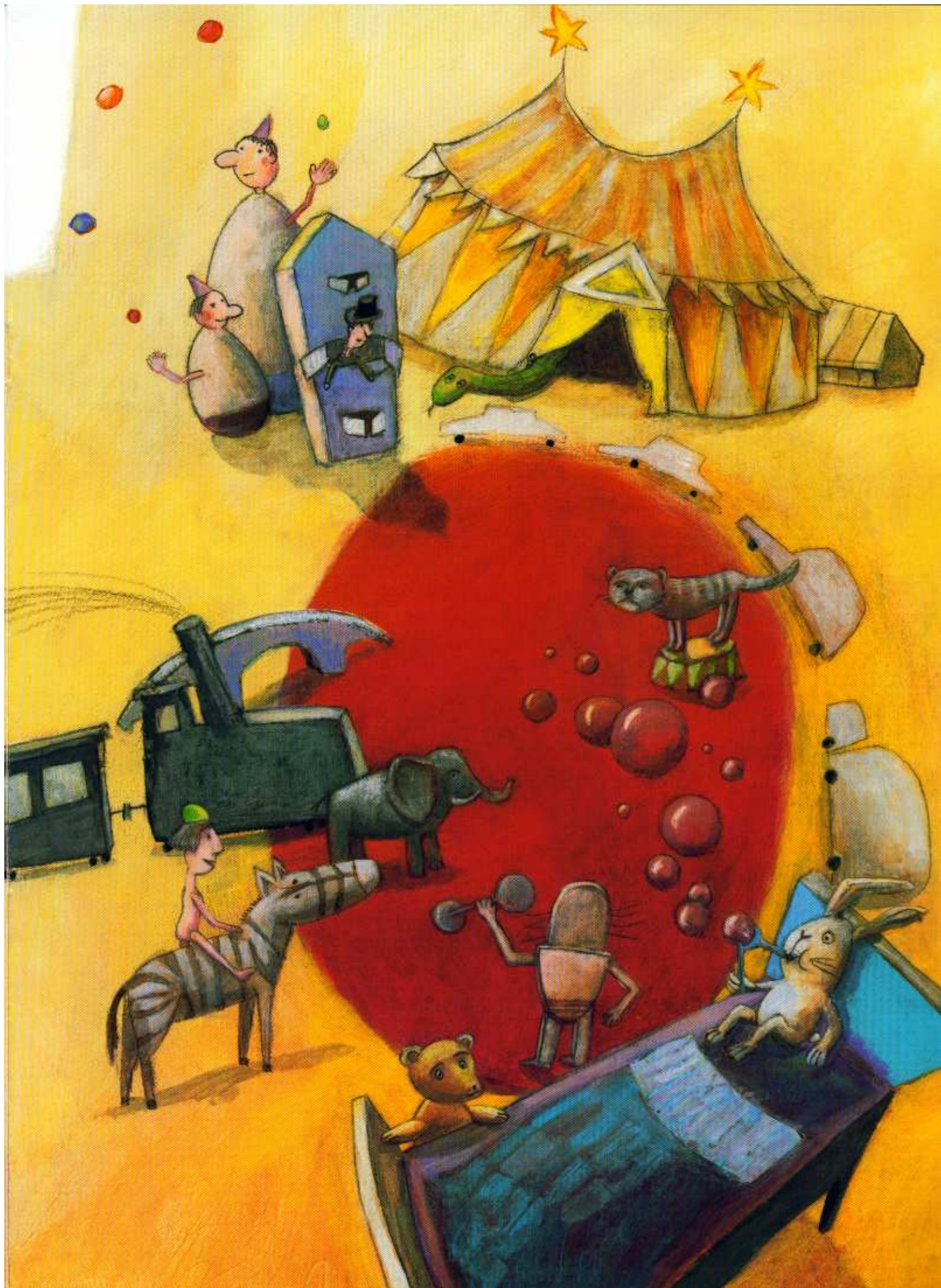
“यह ठीक रहेगा,” सोनी ने कहा।

“क्या मैं यह कमरा जरा ठीक-ठाक कर दूँ?”

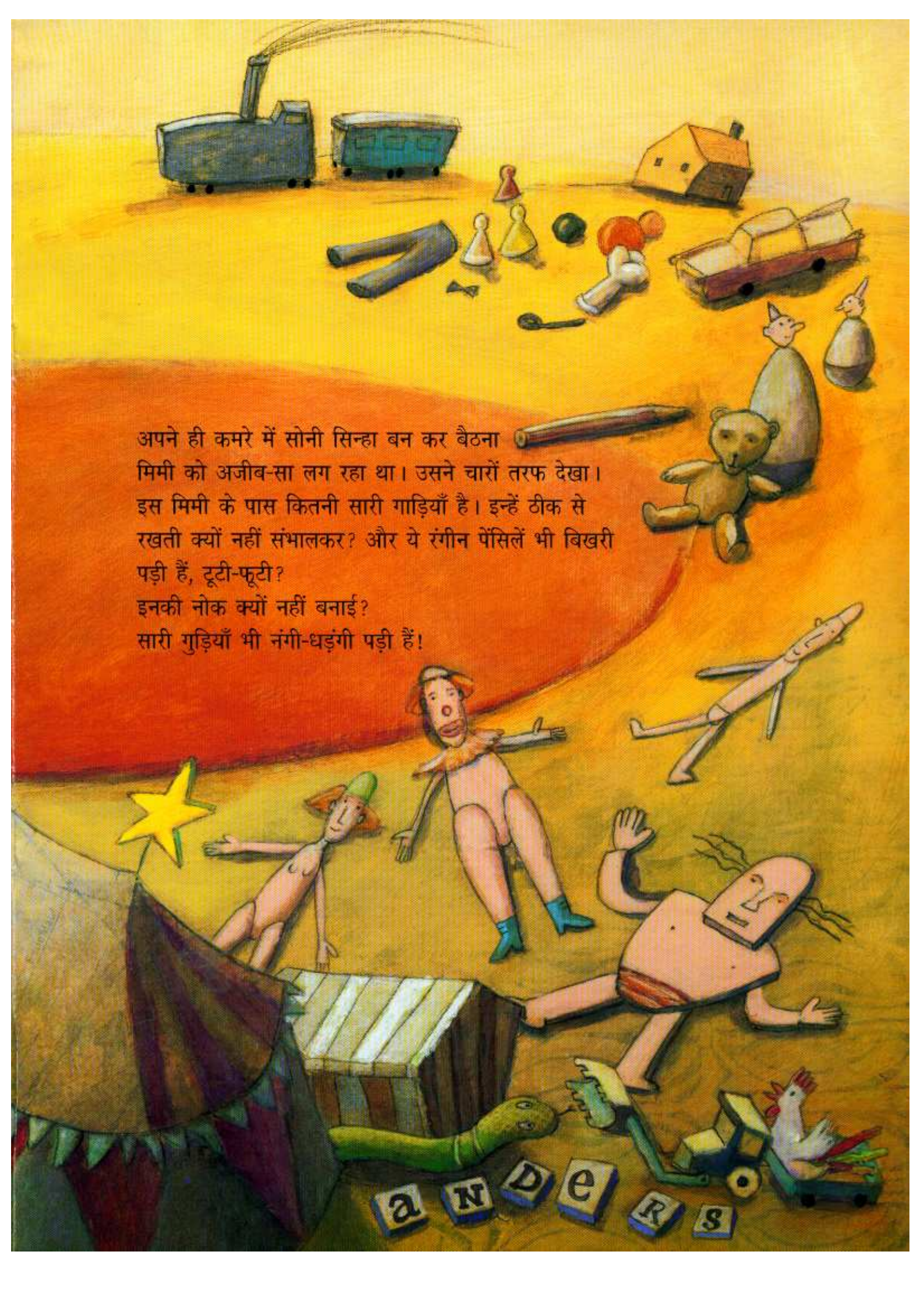
“जरूर,” माँ ने कहा, “पर तुम तो यहाँ मेहमान हो...”

“मुझे साफ-सफाई का शौक है,” सोनी ने कहा।









अपने ही कमरे में सोनी सिन्हा बन कर बैठना
मिमी को अजीब-सा लग रहा था। उसने चारों तरफ देखा।
इस मिमी के पास कितनी सारी गाड़ियाँ है। इन्हें ठीक से
रखती क्यों नहीं संभालकर? और ये रंगीन पेंसिलें भी बिखरी
पड़ी हैं, टूटी-फूटी?
इनकी नोक क्यों नहीं बनाई?
सारी गुड़ियाँ भी नंगी-धड़ंगी पड़ी हैं!

ANDERS

थोड़ी देर बाद, माँ ने कमरे के अन्दर झाँककर देखा।

“मिमी, मेरा मतलब सोनी, क्या तेरी सफाई हो गई?”

“हम्म...” सोनी ने ठंडी साँस ली। “कितना कुछ करना है यहाँ।”

“मैं बस जरा सोच रही थी कि तुम बीच में ब्रेक लो, तो हम बाजार हो आते हैं...”



“जरूर, माथुर आंटी,” सोनी बोली। “मैं अपने जूते पहन लूँ।”

“बढ़िया!” माँ ने कहा, “अरे सोनी, मुझे मिमी को सौ बार कहना पड़ता है, अपने जूते पहनो!”

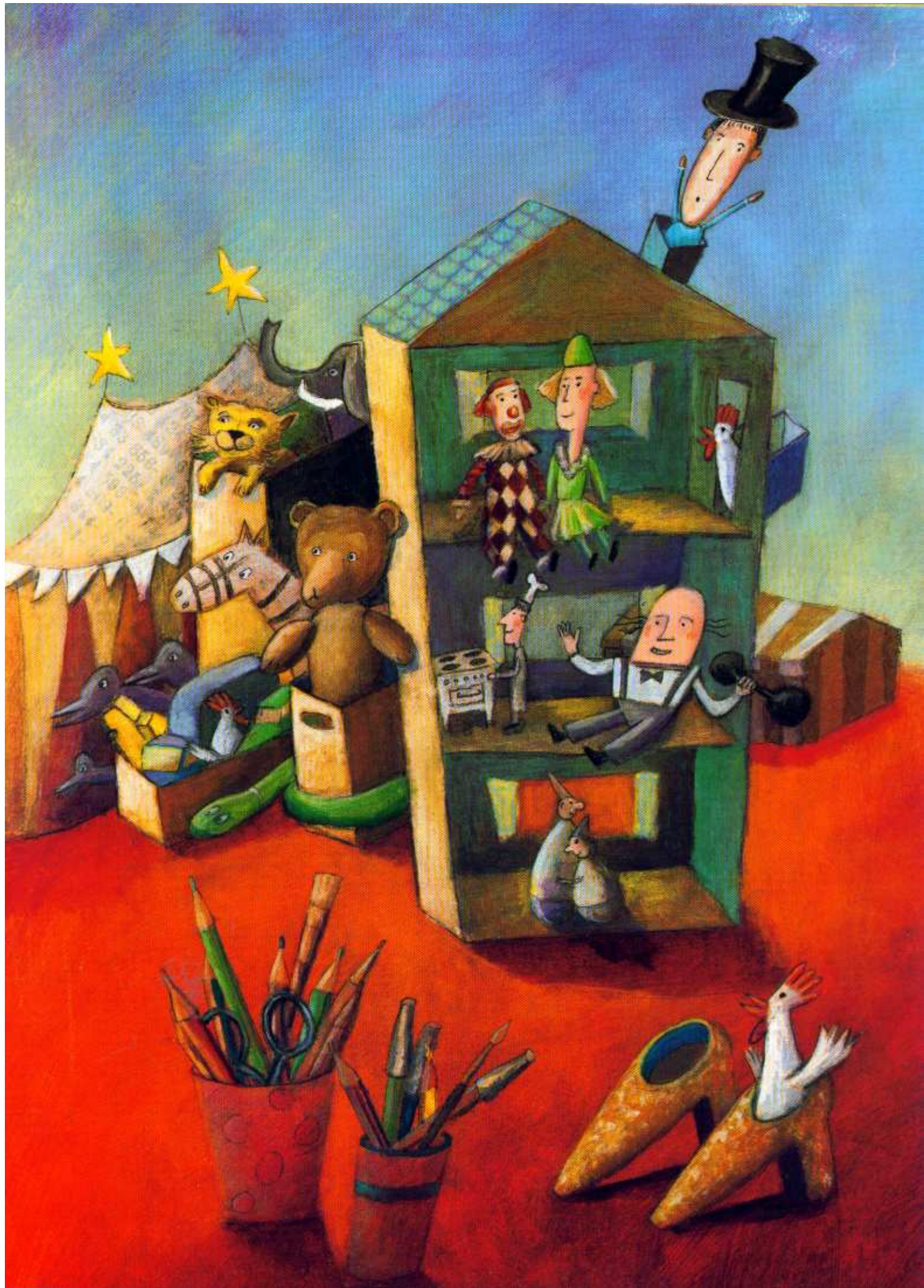
“वह तो जूतों की वजह से,” सोनी बोली। “शायद मिमी जूतों के फीतों से चिढ़ती है। उसे फीते ठीक से बाँधने नहीं आते न, इसलिए... पर वह यह मानना नहीं चाहती।”

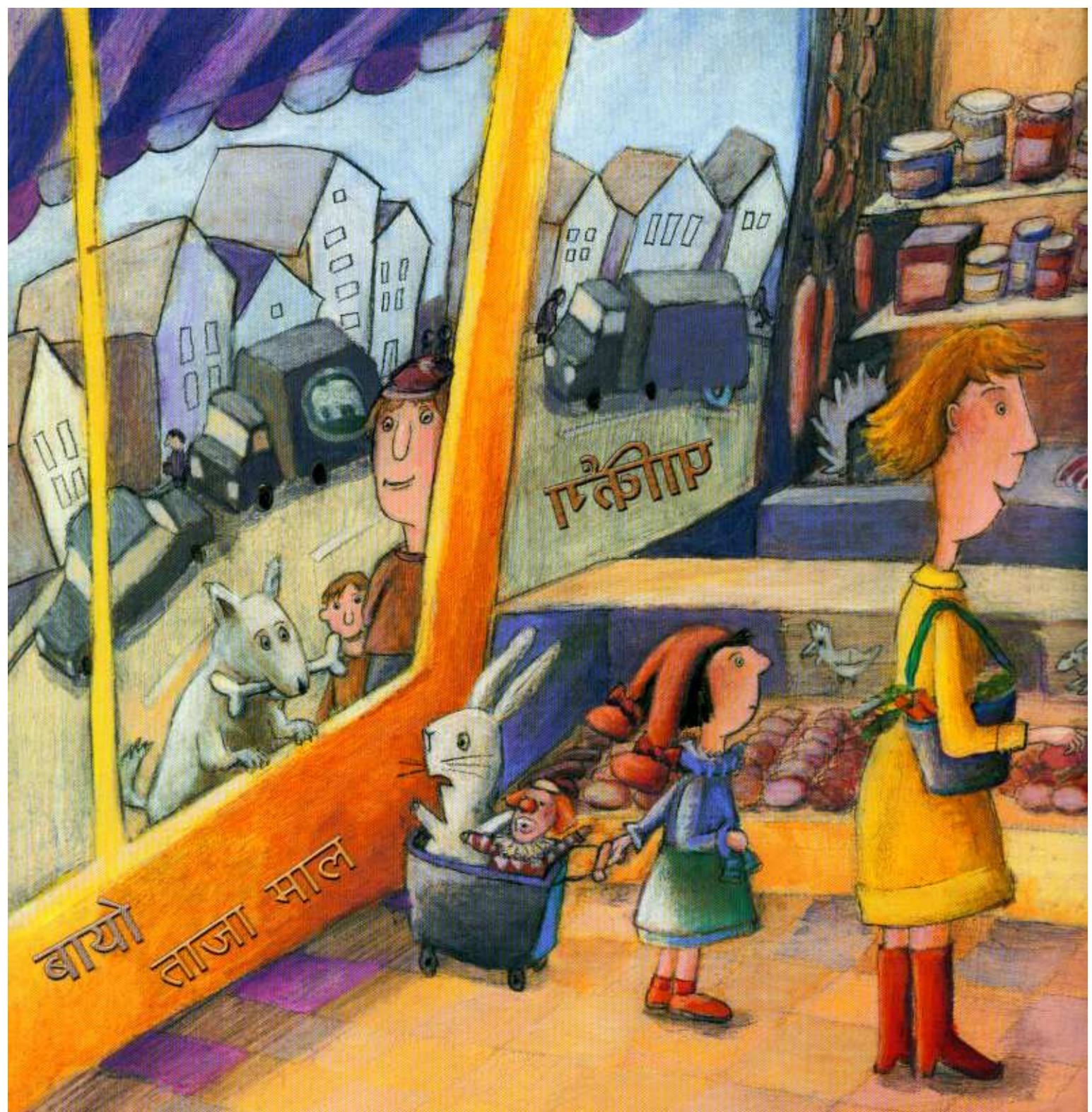
“अरे! यह तो बड़ी मजेदार बात निकली!” माँ बोली।

“वही तो ना...” सोनी बोली। “मदद माँगने से जैसे उसकी नाक कट जाती है।”

“क्या आप मेरे फीते बाँध देंगी, माथुर आंटी?”

“जरूर,” माँ ने कहा।





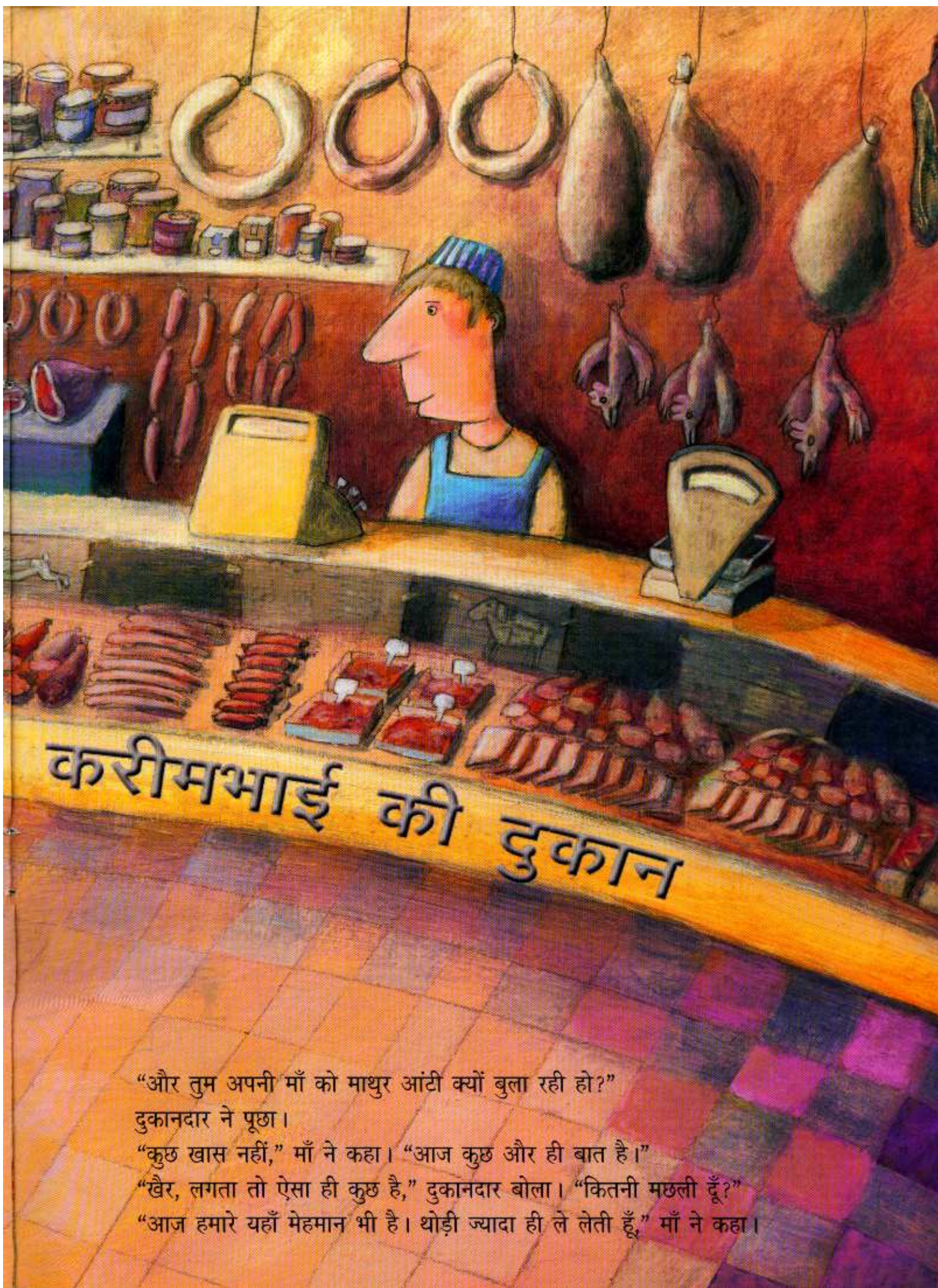
“क्या लेना चाहेंगी, मैडम?” जाने-पहचाने दुकानदार ने पूछा ।

“ओहो! आज तो मिमी भी साथ आई है... क्या बात है मिमी, आज अपनी पसन्द की रोहू मछली नहीं चाहिए?”

“मैं मिमी नहीं, सोनी सिन्हा हूँ,” मिमी बोली । “मैं आज यहाँ माथुर आंटी के साथ आई हूँ।”

दुकानदार ने हैरानी से मिमी को देखा, “अरे यह क्या लगा लिया है, सिर पर?”

“ये मेरी लम्बी चोटियाँ हैं...” सोनी ने कहा ।



“और तुम अपनी माँ को माथुर आंटी क्यों बुला रही हो?”

दुकानदार ने पूछा।

“कुछ खास नहीं,” माँ ने कहा। “आज कुछ और ही बात है।”

“खैर, लगता तो ऐसा ही कुछ है,” दुकानदार बोला। “कितनी मछली दूँ?”

“आज हमारे यहाँ मेहमान भी है। थोड़ी ज्यादा ही ले लेती हूँ,” माँ ने कहा।

“माथुर अंकल,” सोनी ने पूछा, “आप अपनी बेटी के बारे में क्या सोचते हैं?”

“मिमी?” पापा बोले, “मिमी बहुत ही प्यारी लड़की है।”

“अच्छा...” सोनी ने बेमनी से कहा।

“क्यों नहीं? मेरी मिमी तो सचमुच बहुत अच्छी है।”

“हमेशा तो नहीं...”

“न भी हो!” पापा बोले “पर अगर वह हर समय अच्छी बच्ची बनी रहे तो हमें भी अच्छा नहीं लगेगा, उबाऊ हो जाएगा।”

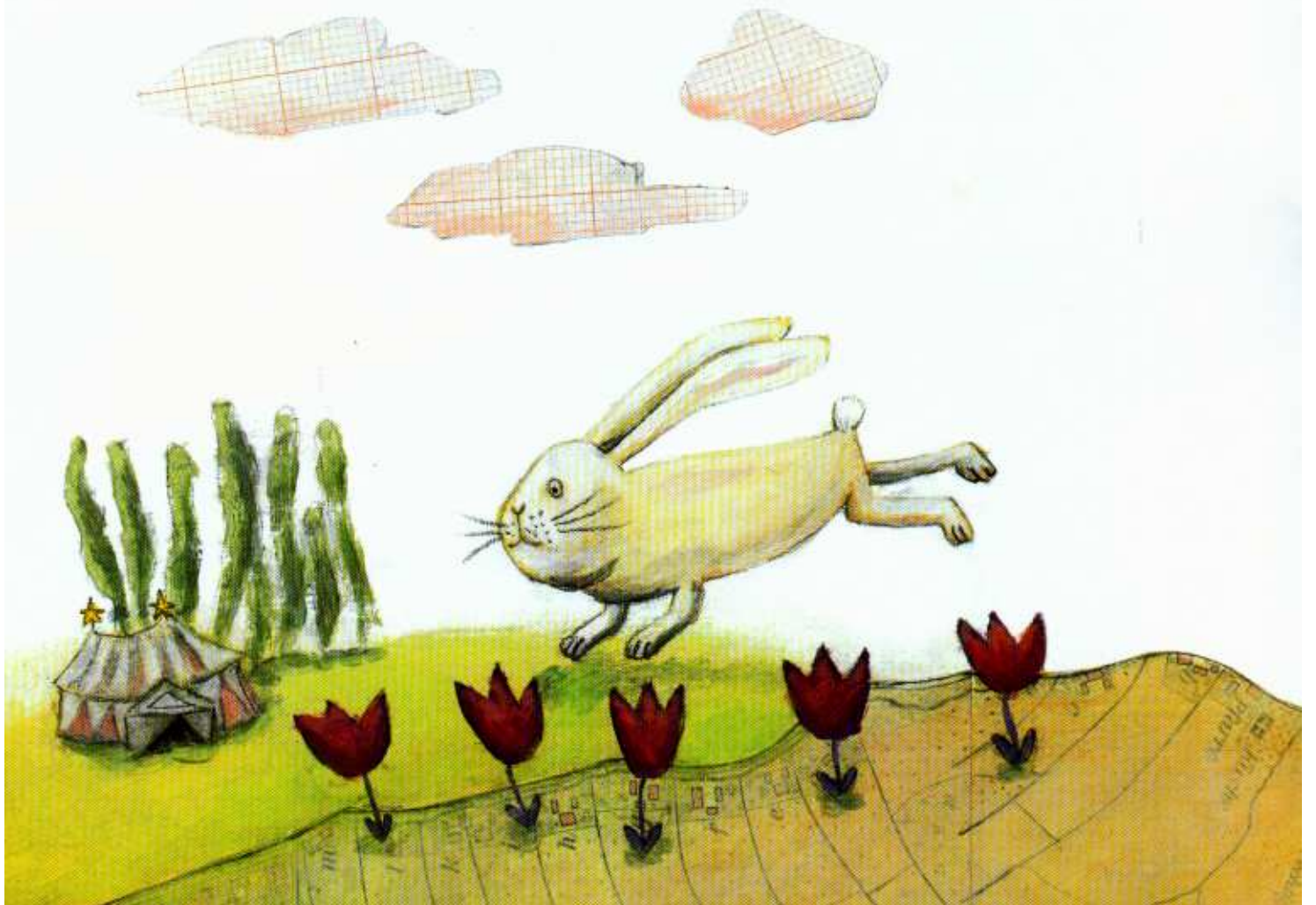
“तो मैं आपको मिमी की कुछ बातें बताती हूँ,” सोनी ने कहा। “सुन कर आप दंग रह जाँगे।”

“अच्छा? कोई बात तो बताओ।”

“हम्म... पता नहीं मुझे आपसे यह कहना चाहिए या नहीं,” सोनी ने हिचकिचाते कहा, “दरअसल, मैंने मिमी से वादा किया था कि मैं आपसे कुछ नहीं कहूँगी।”

“तब तो फिर तुम्हें नहीं बताना चाहिए।” पापा ने कहा।

“हाँ,” सोनी बोली, “मुझे अपना वादा निभाना होगा। पर मिमी बहुत गजब की चीजें करती है।”



“हम्म...” पापा ने पूछा, “क्या कोई बहुत बुरी बात की है उसने?”
सोनी ने हामी में सिर हिलाया। “मैं कुछ कह तो नहीं पाऊँगी पर
कुछ दिखा दूँ तो...”

“क्या?”

“पर आप मिमी को कभी नहीं बताएँगे कि यह मैंने आपको दिखाया था।”

“बिल्कुल नहीं!” पापा बोले। “एक शब्द भी मेरी जुबान से नहीं निकलेगा।”

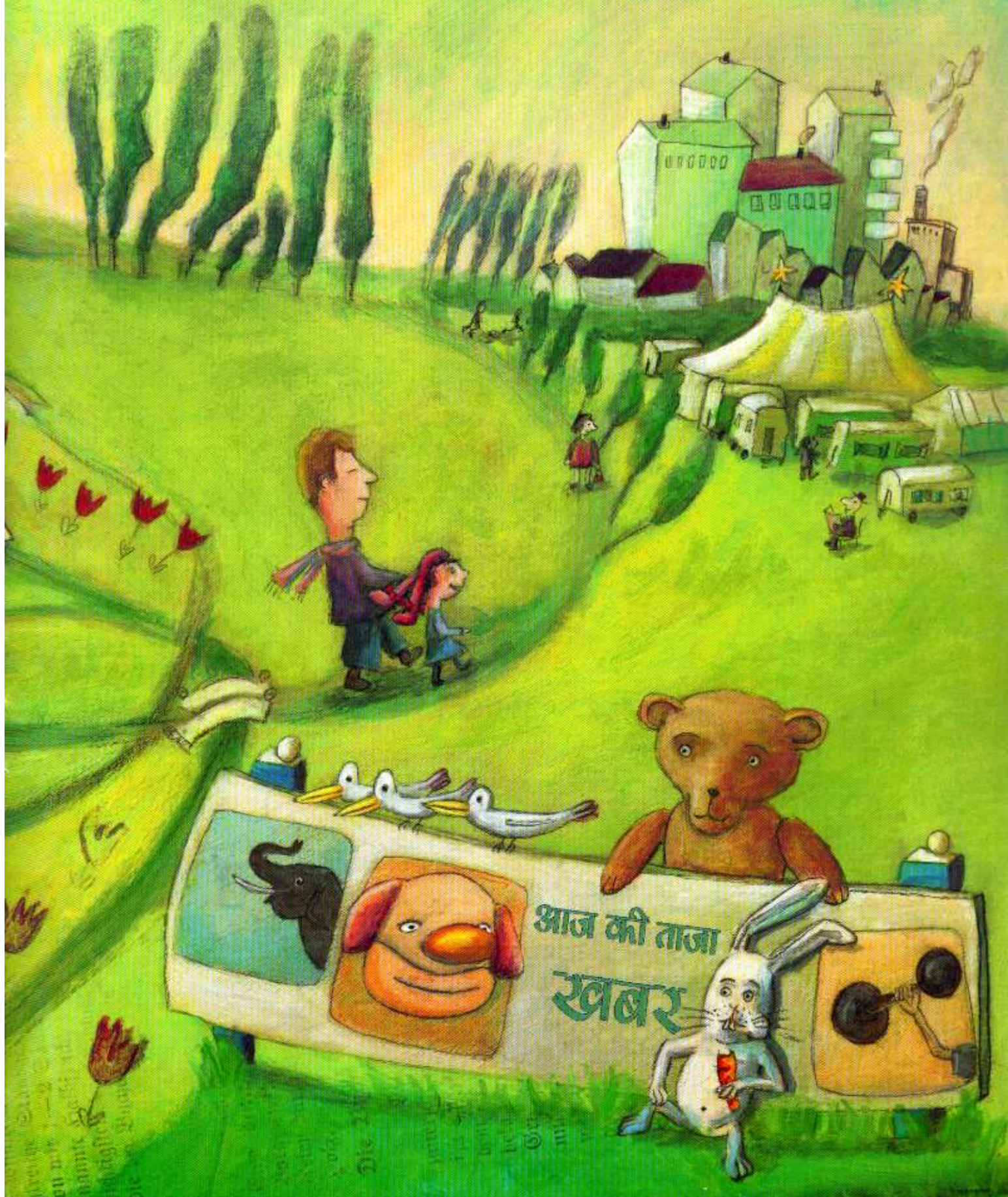
“कसम से?” सोनी ने पूछा।

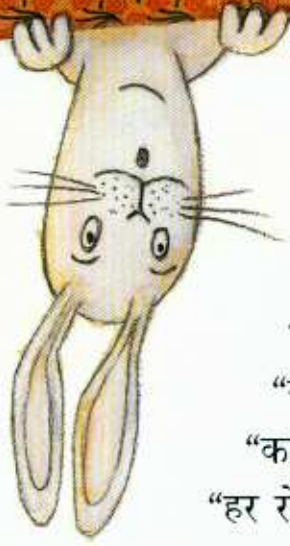
“बिल्कुल पक्का।” पापा बोले।





“तो फिर अपनी आँखें बन्द कीजिए और मेरा हाथ पकड़िए।”
पापा ने आँखें बन्द कीं और सोनी उन्हें मिमी के कमरे में ले गई।





उसने बिस्तर से रजाई हटाई और मिमी का तकिया भी।
तकिये के नीचे चादर पर मिमी ने एक रंगबिरंगा चित्र बनाया था।

“अब आप आँखें खोल सकते हैं,” वह बोली।

पापा ने आँखें खोलीं तो देखकर कहा, “हे भगवान!” जरा-सा
रुककर वे बोले, “अरे, यह तो बहुत सुन्दर बनाया है।”

“मैं मिमी की माँ को भी ले आती हूँ,” सोनी ने कहा।

“यह क्या है? मुझे तो यकीन ही नहीं आता!” माँ बोली।

“कब से चल रहा है, यह सब?”

“हर रोज शाम को थोड़ा-थोड़ा कर मिमी ने इसे बनाया!” सोनी ने
बताया।

“जब आप उसे रात में सुला देती हैं तो वह चुपचाप फिर लाईट जला देती है
और अपना चित्र बनाने में जुट जाती है।”

“अब पता चला! तभी तो वह रात को जल्दी सोना चाहती है,” माँ ने कहा।

“मैंने कहा था न आपसे कि मिमी कोई शरारत कर रही है!” सोनी ने आह
भर कर कहा।

“समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ...” माँ बोली।

“तो अब क्या किया जाए?” पापा ने पूछा।

“वह बहुत डरी हुई है, अगर माँ-बाप को पता चल गया तो क्या होगा?”

सोनी ने बताया।

“समझ रही हूँ,” माँ ने कहा।

“पर यह चित्र बनाया बड़ा प्यारा है,” पापा बोले।

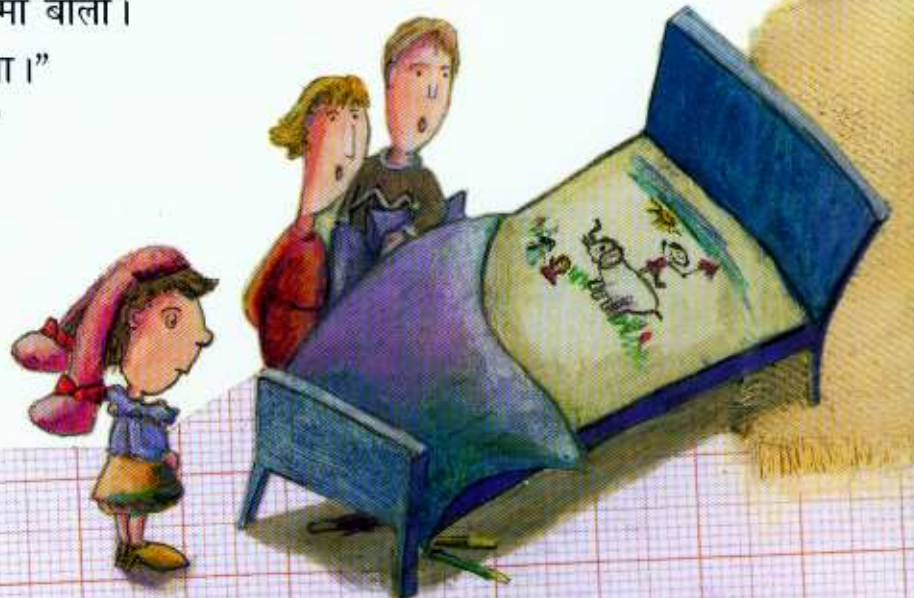
“लेकिन उसे यह चादर पर नहीं बनाना
चाहिए था,” सोनी ने कहा।

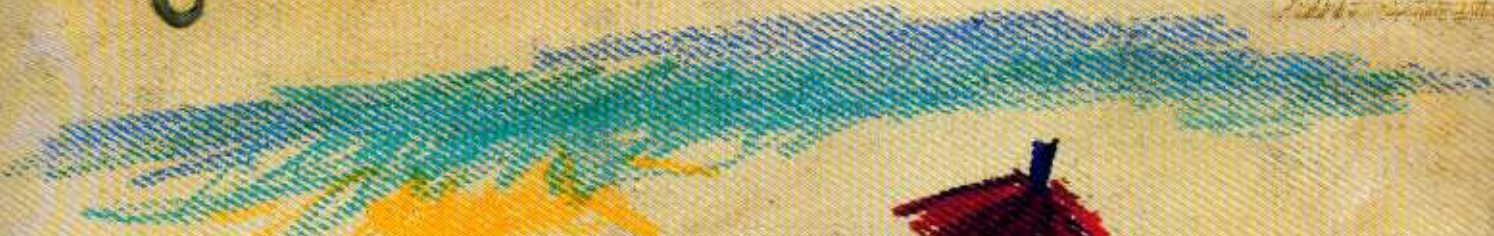
“हाँ, अब यह मिटेगा नहीं,” माँ बोली।

“धुलाई से भी फायदा न होगा।”

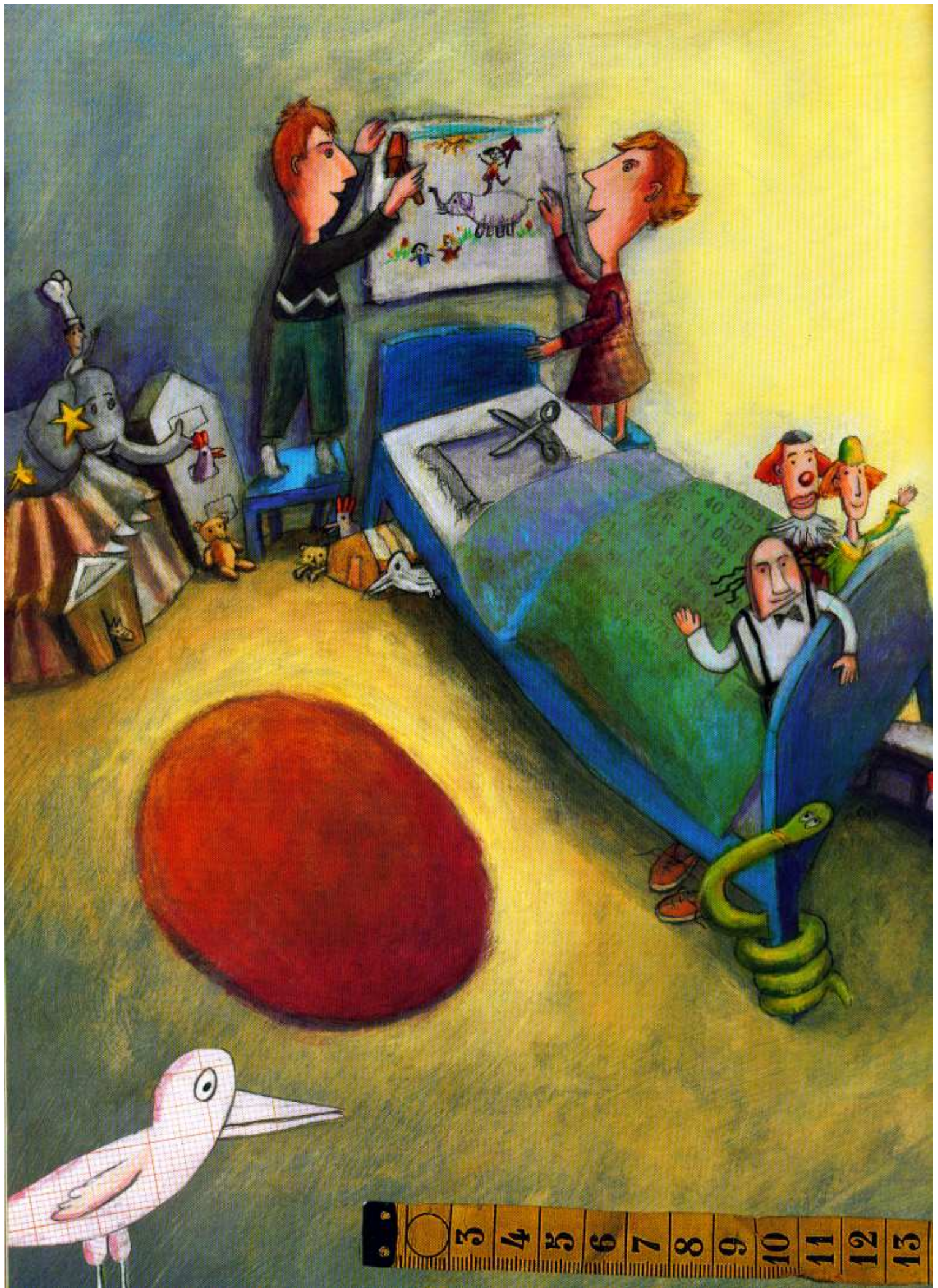
“अगर हम इसे काट दें तो?”

पापा ने पूछा।





5054	618-16085	658
	619-16094	659
5060	620-16120	660
5108	621-16146	661
132	622-16172	662
158	623-16198	663
184	624-16224	664
110	625-16250	665
36	626-16276	666
32	627-16302	667
8	628-16328	668
4	629-16354	669
	630-16380	670
	631-16406	671
	632-16432	672



पापा एक हथौड़ा और कीलें लाए और माँ के साथ स्टूल पर खड़े हो गए।

दोनों ने मिल कर मिमी के पलंग के ऊपर वह चित्र लगा दिया।

“मिमी को बहुत डँट तो नहीं पड़ेगी?” सोनी ने पूछा।

“खैर,” पापा बोले, “जब वह घर लौटेगी तो यह चित्र यहाँ देख कर उसे झटका-सा लगेगा। शायद यह भी पता चले कि चित्र हमेशा कागज पर बनाना चाहिए, चादर पर नहीं।”

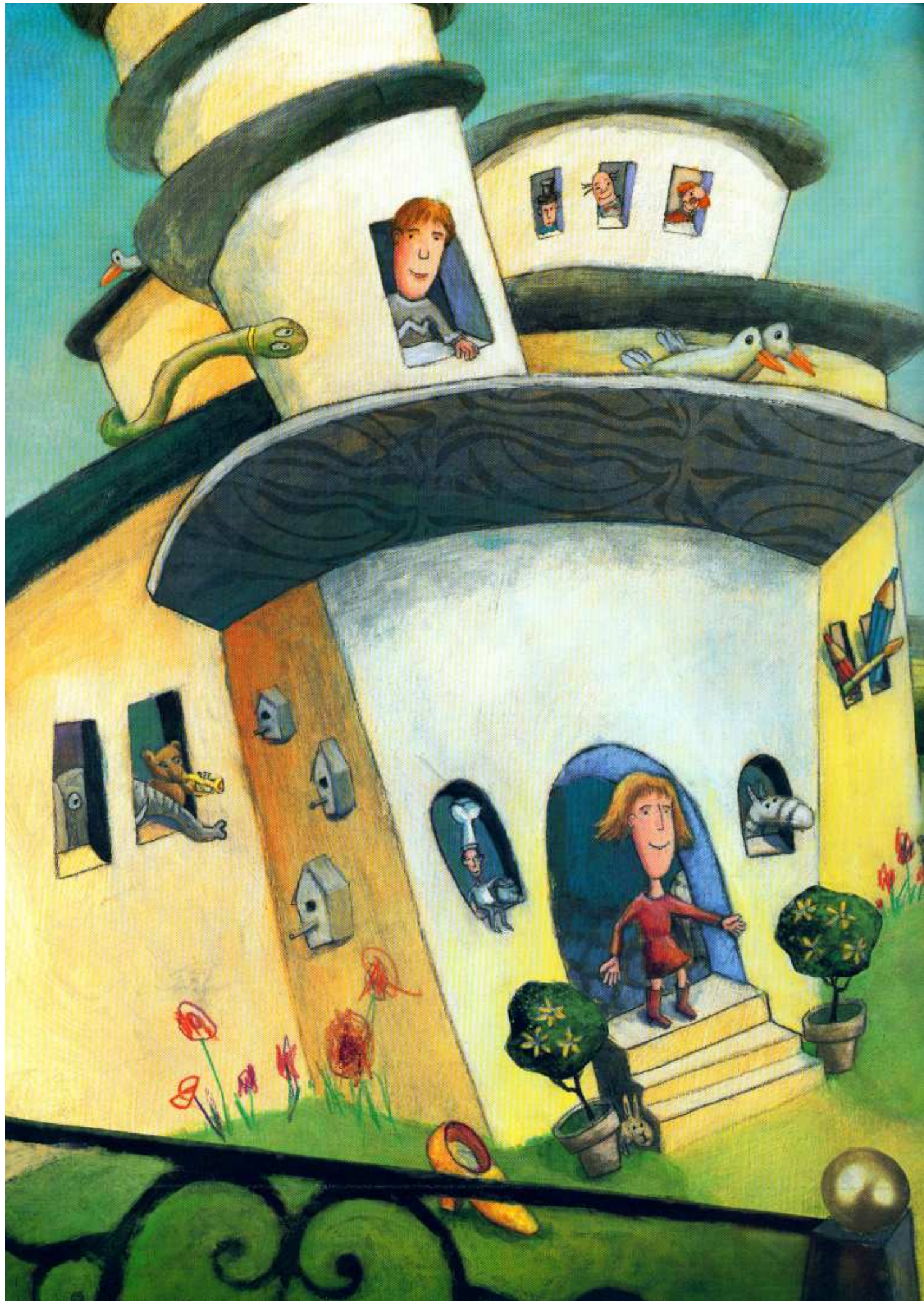
“जी हाँ,” सोनी तपाक से बोली। “मुझे लगता है, वह ऐसी हरकत फिर नहीं करेगी।”

अपनी झूलती चोटी पीछे को झटकते हुए उसने कहा, “अब मुझे घर जाना चाहिए।”

“बड़ा अच्छा किया जो तुम आई,” माँ और पापा बोले। “कभी-कभार आती रहो।”

“जरूर,” कह कर सोनी अगले दरवाजे से बाहर निकल गई और खटाक से दरवाजा बन्द कर दिया।





फिर घर के सामने खड़ी हो कर, सोनी ने सिर से पाजामा उतार फेंका, पेट पर बाँधा स्वेटर का स्कर्ट उतारा और चमकीले जूते भी। अब वह दुबारा मिमी बन गई थी। उसने घंटी बजाई तो माँ ने दरवाजा खोला।

“माँ?” मिमी ने कहा।

“मिमी, आ गई तू! तुझे बस जरा-सी देर हो गई। पता है, हमारे यहाँ कौन आया था?”

“मैं क्या जानूँ?” मिमी ने कहा।

“सोनी सिन्हा!”

“अच्छा, वह।”

“मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि तू लौट आई।” पापा बोले।

“आप दोनों को सोनी सिन्हा अच्छी लगी?” मिमी ने पूछा।

“हाँ,” पापा बोले, “पर मुझे तो तुम ही सबसे अच्छी लगती हो!”



फिर घर के सामने खड़ी हो कर, सोनी ने सिर से पाजामा उतार फेंका, पेट पर बाँधा स्वेटर का स्कर्ट उतारा और चमकीले जूते भी। अब वह दुबारा मिमी बन गई थी। उसने घंटी बजाई तो माँ ने दरवाजा खोला।

“माँ?” मिमी ने कहा।

“मिमी, आ गई तू! तुझे बस जरा-सी देर हो गई। पता है, हमारे यहाँ कौन आया था?”

“मैं क्या जानूँ?” मिमी ने कहा।

“सोनी सिन्हा!”

“अच्छा, वह।”

“मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि तू लौट आई।” पापा बोले।

“आप दोनों को सोनी सिन्हा अच्छी लगी?” मिमी ने पूछा।

“हाँ,” पापा बोले, “पर मुझे तो तुम ही सबसे अच्छी लगती हो!”





145-1155	151-1511	157-1511
146-1156	152-1512	158-1512
147-1157	153-1513	159-1513
148-1158	154-1514	160-1514
149-1159	155-1515	161-1515
150-1160	156-1516	162-1516
151-1161	157-1517	163-1517
152-1162	158-1518	164-1518
153-1163	159-1519	165-1519
154-1164	160-1520	166-1520
155-1165	161-1521	167-1521
156-1166	162-1522	168-1522
157-1167	163-1523	169-1523
158-1168	164-1524	170-1524
159-1169	165-1525	171-1525
160-1170	166-1526	172-1526
161-1171	167-1527	173-1527
162-1172	168-1528	174-1528
163-1173	169-1529	175-1529
164-1174	170-1530	176-1530
165-1175	171-1531	177-1531
166-1176	172-1532	178-1532
167-1177	173-1533	179-1533
168-1178	174-1534	180-1534
169-1179	175-1535	181-1535
170-1180	176-1536	182-1536
171-1181	177-1537	183-1537
172-1182	178-1538	184-1538
173-1183	179-1539	185-1539
174-1184	180-1540	186-1540
175-1185	181-1541	187-1541
176-1186	182-1542	188-1542
177-1187	183-1543	189-1543
178-1188	184-1544	190-1544
179-1189	185-1545	191-1545
180-1190	186-1546	192-1546
181-1191	187-1547	193-1547
182-1192	188-1548	194-1548
183-1193	189-1549	195-1549
184-1194	190-1550	196-1550
185-1195	191-1551	197-1551
186-1196	192-1552	198-1552
187-1197	193-1553	199-1553
188-1198	194-1554	200-1554
189-1199	195-1555	201-1555
190-1200	196-1556	202-1556
191-1201	197-1557	203-1557
192-1202	198-1558	204-1558
193-1203	199-1559	205-1559
194-1204	200-1560	206-1560
195-1205	201-1561	207-1561
196-1206	202-1562	208-1562
197-1207	203-1563	209-1563
198-1208	204-1564	210-1564
199-1209	205-1565	211-1565
200-1210	206-1566	212-1566
201-1211	207-1567	213-1567
202-1212	208-1568	214-1568
203-1213	209-1569	215-1569
204-1214	210-1570	216-1570
205-1215	211-1571	217-1571
206-1216	212-1572	218-1572
207-1217	213-1573	219-1573
208-1218	214-1574	220-1574
209-1219	215-1575	221-1575
210-1220	216-1576	222-1576
211-1221	217-1577	223-1577
212-1222	218-1578	224-1578
213-1223	219-1579	225-1579
214-1224	220-1580	226-1580
215-1225	221-1581	227-1581
216-1226	222-1582	228-1582
217-1227	223-1583	229-1583
218-1228	224-1584	230-1584
219-1229	225-1585	231-1585
220-1230	226-1586	232-1586
221-1231	227-1587	233-1587
222-1232	228-1588	234-1588
223-1233	229-1589	235-1589
224-1234	230-1590	236-1590
225-1235	231-1591	237-1591
226-1236	232-1592	238-1592
227-1237	233-1593	239-1593
228-1238	234-1594	240-1594
229-1239	235-1595	241-1595
230-1240	236-1596	242-1596
231-1241	237-1597	243-1597
232-1242	238-1598	244-1598
233-1243	239-1599	245-1599
234-1244	240-1600	246-1600



तीनों मिल कर मिमी के कमरे में गए।

“यहाँ कुछ अलग-सा नजर आ रहा है?” पापा ने पूछा।

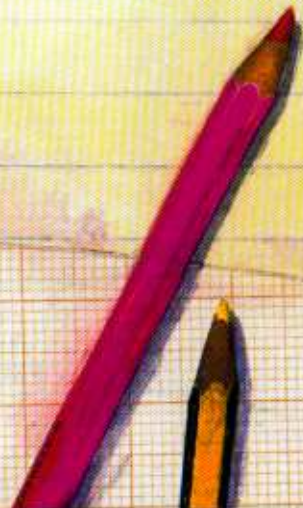
“नहीं तो,” मिमी बोली।

“मुझे भी कुछ बदला नहीं लग रहा।” पापा ने कहा।

“और तुम्हें, माँ?”

“पता नहीं... कुछ समझ नहीं आ रहा...” माँ ने कहा।

“हूँ...” मिमी ने लम्बी साँस ली। “मुझे भी नहीं मालूम। पर मेरा मन अब हल्का हो गया है। दिल कर रहा है कि एक चित्र बनाऊँ...”



मिमी ने कुछ गड़बड़ की है और उसे डर लग रहा है कि माँ-बाप से कैसे कहे?
वह एक तरीका ढूँढ लेती है। कैसे? पढ़कर ही जानना होगा!

जर्मनी की जानी-मानी लेखिका, फिल्म निर्माता डोरिस डोरी की लिखी यह बिल्कुल
तरो-ताजा कहानी “प्यारी बेटी दुलारी बेटी” श्रृंखला की शुरुआत करती है।
श्रृंखला जो लड़की को प्यार और सम्मान की बराबर हकदार मानती है।



₹ 60

ISBN 978-93-80141-18-3



9 789380 141183